REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

सांख्य दर्शन (Sankhya philosophy)

डॉ. राम निवास
सहायक प्रोफेसर , शिक्षा विभाग (CIE) ,
दिल्ली विश्वविद्यालय , दिल्ली.

परिचय

भारतीय दर्शन की परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन परम्परा है। भारतीय दर्शन को न तो एक ग्रन्थ में या किसी एक पुस्तक में बांधा जा सकता है। दर्शन एक वैचारिक यात्रा है, मंथन की यात्रा है, तर्क-वितर्क या शास्त्रार्थ की यात्रा है और ज्ञान व विज्ञान के विकास की यात्रा है जो कि तब से चल रही जब से पृथ्वी पर जीवन की यात्रा शुरू हुईहै और निरंतर गतिशील है। क्योंकि ज्ञान या शिक्षा, दर्शन या विचार निरंतर गति में रहते हैं।

भारतीय दर्शन को आध्यात्म के दर्शन के रूप में भी देखा जाता है। भारतीय दर्शन में मुख्य रूप से छह दर्शन हैं , इसलिए इसे षडदर्शन भी कहा जाता है।षड्दर्शन उन भारतीय दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों के मंथन की परिपक्वता का परिणाम है जो हजारों वर्षो के चिन्तन से विकसित हुआहै और वैदिक दर्शन के नाम से प्रचलित हुआ।इन्हें आस्तिक और नास्तिक, ईश्वरवादी और अनीश्वरवादी, आध्यात्मिक और भौतिकवादी, आत्मवादी और अनात्मवादी आदि वर्गों में विभक्त किया जाता है। षड्दर्शनों में निम्न दर्शन शामिल हैं:

१ पूर्वमीमांसा: महिर्ष जैमिनी २.वेदान्त (उत्तर मीमांसा): महिर्ष बादरायण ३ सांख्य: महिर्ष कपिल ४ वैशेषिक: महिर्ष कणाद ५ न्याय: महिर्ष गौतम ६ योग: महिर्ष पतंजलि

इस अध्याय में हम सांख्य दर्शन पर चर्चा करेंगे

सांख्य दर्शन

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शनों में सबसे प्राचीन दर्शन है, जिसके प्रवर्तक कपिल हैं। सांख्य दर्शन एक आस्तिक व अनीश्वरवादी दर्शन है। सांख्य दर्शन के दो मूल तत्व है प्रकृति और पुरुष। जिसके आधार पर इसे द्वैत दर्शन भी कहा जाता है। सांख्य सारिका में सत,रज,तम की साम्यावस्था को ही प्रकृति कहा है। इसी के आधार पर प्रकृति को त्रिगुणमयी कहा है। प्रकृति को जड़, सक्रिय व त्रिगुणमयी है। पुरुष को आत्मा माना गया है। परुष चैतन्य, निष्क्रिय और त्रिगुणातीत है। यहाँ त्रिगुणातीत से तात्पर्य की पुरुष के गुणों की कोई सीमा नहीं है, या अनंत गुणों से युक्त है। सांख्य दर्शन का विश्वास है की सृष्टिका रचेयता कोई ईश्वर नहीं है। सांख्य दर्शन की मान्यता है कि सृष्टिकी उत्पति पुरुष और प्रकृति के संयोग से हुईहै, जो की स्थूल से स्थूल और सूक्ष्म से सूक्ष्म हो सकती है अर्थात बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी, बड़ी से बड़ी की भी कोई सीमा नहीं और सूक्ष्म से सूक्ष्म की भी कोई सीमा नहीं है। अतः सब कुछ प्रकृति के अधीन है।

'सांख्य' शब्द का अर्थ

सांख्य शब्द के अर्थ या उत्पत्ति से सम्बंधित विभिन्न विद्वानों के भिन्न मत हैं। कुछ विवान इसका अर्थ संख्या से लेते हैं, भागवत में 'तत्व+संख्यान' अर्थात तत्वों की संख्या है जो प्रकृति और पुरुष को साथ मिलकर २५ हैं। इसी गणना के आधार पर इसे सांख्य दर्शन कहा गया है।

संस्कृत के श्लोक के अनुसार:
संख्यां प्रकुर्वते चैव प्रकृतिं च प्रचक्षते।
तत्त्वानि च चतुर्विंशत्तेन सांख्या: प्रकीर्ति ताः॥
अन्य श्लोक देखें
दोषाणां च गुणानां च प्रमाणं प्रविभागत:।
कंचिदर्धममिप्रेत्य सा संख्येत्युपाधार्यताम् ॥

इस श्लोक में दोषों और गुणों को आधार मानकर प्रमाणयुक्त विभाजन किया गया है, जिसे गणनार्थक माना गया है। उसे संख्या समझना चाहिए। स्पष्ट है कि तत्त्व-विभाजन या गणना भी प्रमाणपूर्वक ही होती है। अत: 'सांख्य' को गणनार्थक भी माना जाय तो उसमें ज्ञानार्थक भाव ही प्रधान होता है। निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि 'सांख्य' शब्द में संख्या ज्ञानार्थक और गणनार्थक दोनों ही है। श्री धर स्वामी ने इसे 'तत्वगणक' कहा है जो कि प्रमाणिक व वैज्ञानिक गणना प्रस्तुत करती है।

दूसरा अर्थ यह दिया जाता है कि सांख्य शब्द की व्युत्पत्ति सं+ख्यान से बना है। आइए इसका अर्थ समझने का प्रयास करते हैं, सं=सम्यक +ख्यान=ज्ञान अर्थात सम्यक ज्ञान, सम्यक विचार, सम्यक वाणी। जिसका सम्बन्ध आत्मा के ज्ञान माना जाता है।

सांख्य दर्शन का साहित्य

सांख्य दर्शन को कपिल का दर्शन कहा जाता है। ऐसी मान्यत है कि कपिल ने 'साम्ख्याप्रवचनसूत्र और 'तत्व समास' नामक दो ग्रन्थ लिखे,लेकिन इनका कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। ईश्वर कृष्ण द्वारा रचित 'सांख्यकारिका' ही एक मात्र प्रमाणिक ग्रन्थ है। कालांतर में गौडपाद ने 'सांख्यकारिका' भाष्य के साथ-साथ माण्डुक्य उपनिष्द पर कारिका भी लिखी। सांख्य दर्शन के लिए सबसे प्रमाणिक विद्यावाचस्पति द्वारा रचित 'सांख्यकारिका' की टीका 'सांख्यकौमुदी' है। एक अन्य ग्रन्थ 'सर्व दर्शनसंग्रह' माधवदास द्वारा रचित माना जाता है, जिसमे वर्णित 'सांख्य दर्शन' अध्याय 'सांख्यकारिका' के आधार पर लिखा गया है। इसकेबाद अनिरुद्ध द्वारा रचित 'सांख्यकारिका' नामक टीका जो कि 'साम्ख्प्रवचनसूत्र' ग्रन्थ पर आधारित है। विद्यावाचस्पति की साम्ख्याकौमुदी के बाद विज्ञानभिक्षु का भाष्य 'सांख्यप्रवचन' है जो की ईश्वरवादी है। विज्ञानभिक्षु से पहले सांख्य दर्शन में ईश्वर की अवधारणा का वर्णन नहीं मिलता है। विज्ञान भिक्षु ने 'सांख्यसार' नमक ग्रन्थ भी लिखा। बाद में सांख्य दर्शन में योग दर्शन जुड़ गया जिसके बाद से यह सांख्य-योग दर्शन के नाम से जाना जाता है। सांख्य दर्शन एक अनीश्वरवादी दर्शन है जबकि सांख्य-योग ईश्वरवादी दर्शन है। सांख्य योग का वर्णन महाभारत में भी मिलता है। गीता में श्री कृष्ण ने सांख्य योग का वर्णन किया है।

सांख्य दर्शन का स्वरूप

सांख्य दर्शन आस्तिक, निरीश्वरवादी व द्वैत दर्शन है। आस्तिक का भाव यहाँ ईश्वर में विश्वास से न होकर वेदों की प्रमाणिकता से है। अर्थात जो वेदों की प्रमिकत को स्वीकार करता है आस्तिक दर्शन है जो स्वीकार नहीं करता वह नास्तिक दर्शन है। यह दर्शन ईश्वर में विश्वास नहीं करता,इसकी मान्यता है की सब कुछ प्रकृति के अधीन है। सांख्य दर्शन को द्वैत दर्शन इसलिए कहा जाता क्योंकि इसमें प्रकृति और पुरुष प्रधान तत्व हैं। आईए संख्या दर्शन को विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं।

सांख्य दर्शन के अनुसार २५ तत्व

पुरुष
प्रकृति
चेतन
जड़
निष्क्रिय
सक्रिय
महत (बुद्धि)
त्रिगुणातीत
त्रिगुणमयी
अहंकार
मन
पंच महाभूत
पांच ज्ञानेन्द्रियाँ
पांच कर्मेन्द्रियाँ
पांच तन्मात्र

उपरोक्त सांख्य का एक अन्य सूत्र है-
सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति: प्रकृतेर्महान,
महतोऽहंकारोऽहंकारात् पंचतन्मात्राण्युभयमिनिन्द्रियं
तन्मात्रेभ्य: स्थूल भूतानि पुरूष इति पंचविंशतिर्गण:।।

अर्थात् सत्व, रजस और तमस की साम्यावस्था को प्रकृतिकहते है। साम्यावस्था भंग होने पर बनते हैं: महत् तीन अहंकार, पाँच तन्मात्राएँ, १० इन्द्रियाँ और पाँच महाभूत। पच्चीसवां गण है पुरूष।

प्रकृति और गुण

प्रकृति जड़ है, सक्रिय और त्रिगुणमयी है। सत्व, रजः, तमः – इन तीन गुणों की साम्यावस्था को प्रकृति कहा जाता है।सत्व और तमस स्वतः निष्क्रिय होते हैं। तमस इनको कार्य करने की क्षमता देता है।सत्व का धर्म प्रकाश है अर्थात यह वस्तुओं को प्रकाशित करता है।, रजस् का धर्म प्रवृतिहै यह सत्व और तमस को सक्रिय होने के ले प्रेरित करता है। तमस् गुरु(बड़ा) होता है इसका का धर्म नियम है, यह क्रिया में बाधा उत्पन्न करता है। इन तीनों गुणों के कम या ज्यादा होने से प्रकृति में विषमता आती है जससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है। उसमें विकृति आती है। प्रकृति की इस विकृति भाव से ही जीव और जगत की सृष्टिहोती है। जीव और जगत अवर्णनीय रूप में प्रकृति में विद्यमान रहते हैं। इसी कारण से प्रकृति का एक और नाम "अव्यक्त" है। प्रकृति बना है प्र और कृति के संयोग से। प्र का अर्थ है प्रकर्ष और कृति का अर्थ है निर्माण करना। जिन मूल तत्वों से मिलकर बाकी सब कुछ बनता है, उसे प्रकृति कहते हैं।

महत(बुद्धि)

महत जिसको प्रकृति का प्रथम परिणाम माना जाता है। मन और बुध्दि इसी महत् से बनते हैं। मन को अन्तरेन्द्रिय कहा गया है। महत अर्थात बुद्धि की वृतियांस्वरूपतः अचेतन हैं,क्योंकि प्रकृति भी स्वभावतः जड़/अचेतन है। बुद्धि जब पुरुष के संयोंग में आती है तो चेतन प्रतीत होती,परन्तु यह बुद्धि का वास्तविक गुण नहीं है।

अहंकार

पुरुष में कर्ता भाव का आना अहंकार कहलाता है। इंद्रिय का विषय में पड़ना अहंकार तत्व का परिणाम हैं।अहंकार की उत्पत्ति महत अर्थात बुद्धि का परिणाम है।

इन्द्रियां:

सांख्य दर्शन के अनुसार इन्द्रियों को मुखतः दो भागों में बटन जाता है बाह्य इन्द्रियां और अन्तरेन्द्रिय। बाह्य इन्द्रियां भी दो प्रकार की होती हैं जिनमे पांच कमेंद्रियाँ हैं और पांच ज्ञानेन्द्रियाँ आती हैं।

कमेंद्रियाँ

वाक्(वाणी), पाणि(हाथ),पाद(पांव), गुदा (मल त्याग) और उपस्थ(मूत्र त्याग) ये पांच कर्मेन्द्रियाँ हैं। जिनका विषय क्रमशः बोलना ,पकड़ना,चलना, मल त्याग और मूत्र त्याग है। ये सब कर्मेन्द्रियाँ शरीर को सक्रिय और स्वस्थ और चेतन रखने में मदद करती हैं। वाणी के बिना न केवल गूंगे होंगे बल्कि भाषा का विकास रुक जायेगा और ज्ञान का स्थानांतरण नहीं होगा और और न ही ज्ञान का विकास होगा।ज्ञान के विकास के आभाव में विज्ञान का विकास नहीं होगा। अतः कल्पना करें की कर्मेन्द्रियाँ यदि क्रिया न करें तो क्या हो।

ज्ञानेद्रियाँ

ज्ञानेद्रियाँ जिनके बिना मनुष्य ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता जो की संख्या में पांच हैं। इन पांच ज्ञानेद्रियाँ के बिना मनुष्य न तो संसार को देख सकता है, और ना ही अनुभव व अनुभूति कर सकता है। ये पांच ज्ञानेद्रियाँ इस प्रकार हैं: १. आँख २. कान ३.नाक ४. जिव्हा ५. त्वचा। इन सभी इन्द्रियों के अलग-अलग विषय है, जैसे आँख का विषय देखना है, कान का विषय सुनना, नाक का विषय सूंघना, जिव्हा का विषय चखना, और त्वचा का विषय स्पर्श करना है।

पंच तन्मात्र (विशेषताएं)

पंत्र तन्मात्र अहंकारतत्व का एक परिणाम है। पांच तम्मात्राएं है --

• रूप २. रस ३. गन्ध ४.स्पर्श ५. शब्द

पंच तन्मात्रों से पंच महाभूतों पृथ्वी, जल,अग्नि, वायु और आकाश की उत्पत्ति होती है।

पंच महाभूत

पंच महाभूतों को इस श्लोक के माध्यम से समझा जा सकता है:

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।

पंच रचित यह अधम शरीरा।।

अर्थात मनुष्य का शरीर पांच तत्वों से बना है जिसमे क्षिति/पृथ्वी अर्थात मिटटी, जल,पावक अर्थात अग्नि,गगन और समीर यानि वायु, इन पांच तत्वों से मिलकर शरीर बना है।

पुरूष

सांख्य दर्शन में पुरूष को आत्मा माना है, जो की चैतन्य है, निष्क्रिय है और त्रिगुणातीत है। पुरुष त्रिगुणातीत अर्थात गुणों से परे है। पुरुष भोक्ता है कर्ता नहीं। पुरुष जब प्रकृति के सम्पर्क में आता है तो दुखों में घिर जाता है।

सांख्य दर्शन की विशेषताएँ

सांख्य दर्शन में कार्य-कारण की अवधारणा

सांख्य दर्शन की मान्यता है कि जगत की उत्त्पति का कारण प्रकृति है न कि ईश्वर।सांख्य दर्शन का कारण-सिद्धान्त यह है कि बिना कारण के कार्य नहीं होता अर्थात कार्य कारण में पहले से ही अव्यक्त रूप में विद्यमान रहता है।अतः कार्य

को कारण का परिणाम कहें या कार्य कारण की अभिव्यक्ति है दोनों एक ही बात है। सांख्य का कारण सिद्धान्त को सत्कार्यवाद या परिणामवाद भी कहा जाता है। सांख्य दर्शन का मत है कि सत से सत की उत्त्पति होती है और असत से असत की अर्थात सत कारण से सत कार्य की व्युत्पत्ति होगी।

सांख्य दर्शन में परिणाम की अवधारणा

सांख्य दर्शन में परिणाम का अर्थ प्रकृति में होने वाले निरंतर परिवर्तनों से लिया जाता है। ये सभी परिवर्तन प्रकृति के तीन गुण सत राज और तमस के कारण होते हैं। इसी आधार पर सम्ख्यावादी ये मत रखते है कि जगत शून्य नहीं है बल्कि जगत प्रकृति का परिणाम है जो निरंतर गतिशील और परिवर्तनशील है। सांख्यवादियों ने उत्त्पत्ति को विकार का परिणाम कहा है।

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति से महत(बुद्धि), महत से अहंकार, अहंकार से ग्यारह इंद्रियों (पांच कर्मेन्द्रियाँ,पांच ज्ञानेद्रियाँ और मन) और पांच तन्न्मात्र की उत्पत्ति हुईहै। जिनकी संख्या २४ है पुरुष इन तत्वों से अलग है पुरुष को मिलकर संख्या २५ हो जाती है। इसी संख्या के आधार पर इस दर्शन को सांख्य दर्शन कहा जाता है, इक मत यह भी है।

सांख्य दर्शन में ईश्वर और आस्तिक-नास्तिक की अवधारणा

सांख्य दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, इसलिए यह अनीश्वरवादी दर्शन है। सांख्य दर्शन अनीश्वरवादी होते हुए भी आस्तिक दर्शन है। अब मन में प्रश्न उठ रहा होगा कि जो हमें पूर्व की कक्षाओं में पढ़ाया गया वाक्यांश के लिए एक शब्द 'ईश्वर में विश्वाश रखनेवाला-आस्तिक' और 'ईश्वर में विश्वास न रखने वाला-नास्तिक' वह क्या था तो क्या हमने गलत पढ़ा तो उत्तर है नहीं क्योंकि विभिन्न दर्शन भिन्न मत रखते हैं, सांख्य दर्शन ही नहीं बल्कि सभी भारतीय आस्तिक व नास्तिक दर्शन इस मत से सहमत नहीं है। सभी भारतीय दर्शन वेदों की प्रमाणिकता को आस्तिक व नास्तिकता का आधार मानतें हैं। जो वेदों की प्रम्निकता में विश्वास रखते हैं वे आस्तिक दर्शन हैं और जो स्वीकार नहीं करते वे नास्तिक दर्शन कलते हैं।

सांख्य दर्शन में आत्मा की अवधारणा

सांख्य दर्शन परुष को आत्मा मानता है जो कि चैतन्य है परन्तु निष्क्रिय है,पुरुष क्योंकि त्रिगुणातीत(तीनों गुणों से परे) है और प्रकृति त्रिगुणीय है।सांख्य दर्शन अनेक पुरुषों अनेक आत्माओं के अस्तित्व में विश्वास करता है।इसके समर्थन में या तर्क देता है कि अनेक व्यक्तिओं के जन्म,मरण, और इन्द्रियां अलग अलग होती हैं। एक पुरुष होने से व्यक्तिक भिन्नता का लोप हो जाता अर्थात एक में इन्द्रिय दोष हो जाने से सभी में इन्द्रिय दोष हो जाते। एक के रोगी होने सब रोगी हो जाते।

सांख्य दर्शन में मोक्ष की अवधारणा

कैवल्य की अवस्था जब पुरुष इस चैतन्य को प्राप्त कर ले और अपने आप को शुद्ध पुरुष के रूप में समझ ले, तो इस अवस्था को कैवल्य कहते हैं। कैवल्य की अवस्था में मनुष्य सुख और दुख से ऊपर उठ जाता है। चेतना के स्तर पर पहुंचजाने से दुखोंकी निवृत्तिहो जाती है और इसे ही मोक्ष कहते हैं। सांख्य के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति का उपाय पूजा-पाठ या किसी ईश्वर की उपासना नहीं है, बल्कि अपनी चेतना के असली स्वरूप को समझ लेना ही है।

सांख्य दर्शन में दुःख की अवधारणा

मनुष्य के दुःख का कारण है मुख्यतः आध्यात्मिक, अधिदैविक एवं अधिभौतिक अपराधबोध हैं। कपिल मुनि के अनुसार सांख्य अर्थात ज्ञान ही इन तीनों दुःखोंसे मुक्ति का उपाय है।

संख्या दर्शन का प्रथम सूत्र से समझने का प्रयत्न करते हैं।
अथ त्रिविधदु:ख: खात्यन्त: निवृत्तिरत्यन्तपुरूषार्थ:।। १ ।।

उपरोक्त श्लोक का अर्थ है कि मनुष्य तीनों प्रकार के दु:खों-आधिभौतिक (शारीरिक), आधिदैविक एवं आध्यात्मिक से पूर्णतः मुक्त होने के लिए भरसक प्रयास करता है। सांख्य का मूल उद्देश्य भी इन तीनो प्रकार के दु:खों से जीवन की निवृत्ति है। तीन दु:ख है।

आधिभैतिक- यह दु:ख मनुष्य की शारीरिक पीड़ा से सम्बंधित है जैसे बीमार होना, अपंग होना इत्यादि।

आधिदैविक- ये दु:ख दैवीय अर्थात प्राकृतिक आपदा के कारण होते हैं, जैसे बाढ़, आंधी, तूफान, भूकंप इत्यादि के प्रकोप ।

आध्यात्मिक- यह दु:ख सीधे मनुष्य की आत्मा से सम्बंधित होते हैं , इन दुखोंका कारन मनुष्य का शरीर व् दैविक दोनों हो सकते हैं।। उदाहरणार्थ-कोई अपनी संतान अपना माता-पिता के बिछुड़ने पर दु:खी होता है अथवा कोई अपने समाज की अवस्था को देखकर दु:खी होता है। ये दो प्रकार के होतें हैं- मानसिक और शारीरिक।

सांख्य दर्शन में ज्ञान की अवधारणा

पुरुष निरंतर अपने बारे में चेतना प्राप्त करता है और इसी क्रम में अपने और प्रकृति के अस्तित्व के भेद का ज्ञान प्राप्त करता है। प्रकृति से पुरूष की स्वतंत्रता या मुक्ति के विवेक को "ज्ञान" कहा जाता है। "ज्ञानामुक्ति"! अर्थात ज्ञान ही मुक्ति है। इसी ज्ञान के आधार पर मनुष्य दुखोंके बंधन से मुक्त होता है और कैवल्य की ओर अग्रसर होता है। सांख्य के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति का उपाय पूजा-पाठ या किसी ईश्वर की उपासना नहीं है, बल्कि अपनी चेतना के असली स्वरूप को समझ लेना ही है।

सारांश

सांख्य मत में, जीव और जगत की सृष्टिमें ईश्वर के वशीभूत न होकर प्रकृति के अधीन है।

सांख्य दर्शन में जगत के दो भाग माने हैं पुरूष और प्रकृति।जिनके मिलन से सृष्टि अर्थात जीव की उत्त्पत्ति होती है। सांख्य दर्शन पुरूष और प्रकृति दोनों ही अनादि मानता है।पुरूष चेतन है, प्रकृति जड़। पुरुष(आत्मा) मनुष्य का चेतन तत्व है जबकि प्रकृति अचेतन है।पुरूष निष्क्रिय है, प्रकृति क्रियाशील।चेतन पुरूष के सान्निध्य से प्रकृति भी चैतन्यमयी लगती है।पुरूष केवल भोक्ता है, कर्ता नहीं।पुरुष का यह भोग औपचारिक है।पुरूष सर्वदा ही दुखवर्जित है।दु:ख तो बुद्धि का विकार है।दुख का कारण अज्ञानतावश पुरुष और प्रकृति में भेद नहीं कर पाना है।दु:खबुद्धिपुरूष में प्रतिबिम्बित मात्र होती है। दुखों और सुखोंका विश्लेषण इन्हीं चौबीस तत्वों और पुरुष के संयोग के आधार पर किया जाता है। दुखों का कारण सांख्य दर्शन अज्ञान को मानता है इसी अज्ञानता के कारण ही जीव को बन्धन में बंधना पड़ता है। अर्थात दुख और संसार में आवागमन के चक्र में फंसना पड़ता है। सांख्य दर्शन ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता है। यह एक आस्तिक दर्शन है। सांख्य दर्शन एक वैज्ञानिक दर्शन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- देवराज,(१९९४) दर्शन: स्वरूप,समस्याएं एवम जीवन-दृष्टि नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
- सिन्हा, अजित कुमार, (१९९१) समकालीन दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़।
- रमेशचन्द्र, (१९७४) Types of Philosophy by William Ernest hocking दर्शन के प्रकार (अनुवाद), राजस्थान दर्शन अकादमी।
- वर्मा, वेद प्रकाश, (१९८९) दर्शन की विवेचना, सिटीजन प्रेस, नई दिल्ली।
- वालिया, जे. एस. (२०११) शिक्षा के दार्शनिक एवम् सामाजिक आधार,अहिम पॉल पब्लिशर्स, जालन्धर।
- यादव,नरेश कुमार (२०१२) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आरोही पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- दीवानचंद, (१९६८) दर्शन संग्रह, छोटे लाल भार्गव, जी० डब्लू लॉरी एंड क०, लखनऊ ।
- संबधित पुस्तकें

- राधाकृष्णन, (१९९८) भारतीय दर्शन, भाग-२, हिंदी अनुवाद प्रकाशक,राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट,दिल्ली
- सिन्हा, जदुनाथ,(२०००) भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली।
- गैरोला,वाचस्पति,(२००९) भारतीय दर्शन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।

LBP PUBLICATION